Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

नारायणपुर जिले के अबूझमाड़िया जनजाति का समाज एवं अर्थव्यवस्था का अध्ययन

डॉ. राजू चन्द्राकर
अतिथि व्याख्याता), भूगोल विभाग,शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय पेण्ड्रा, जिला-गौरेला पेण्ड्रा मरवाही (छ.ग.)

सार
यह अध्ययन छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले में निवास करने वाली अबूझमाड़िया जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य इस जनजाति की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परंपराओं तथा आर्थिक गतिविधियों को समझना है। यह शोध 200 उत्तरदाताओं के नमूने पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि अबूझमाड़िया जनजाति का सामाजिक जीवन प्रकृति-आधारित, सामुदायिक एवं परंपरागत मूल्यों पर आधारित है। इनकी अर्थव्यवस्था मुख्यतः झूम कृषि, वनोपज संग्रह तथा पारंपरिक आजीविका साधनों पर निर्भर है। आधुनिक शिक्षा, संचार एवं सरकारी योजनाओं के प्रभाव से इनके जीवन में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। हालांकि, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आधारभूत सुविधाओं की कमी इनके विकास में बाधा उत्पन्न करती है। अतः यह अध्ययन इस जनजाति के संतुलित विकास एवं सांस्कृतिक संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।अबूझमाड़िया जनजाति का सामाजिक जीवन अत्यंत सरल, प्राकृतिक और सामुदायिक होता है। ये लोग मुख्यतः छत्तीसगढ़ के घने वनों में निवास करते हैं और छोटे-छोटे समूहों (टोलों) में रहते हैं। परिवार पितृसत्तात्मक होता है, किन्तु महिलाओं को भी सम्मान प्राप्त होता है। विवाह प्रथा सरल होती है तथा सामूहिक सहमति महत्वपूर्ण होती है। इनके रीति-रिवाज, नृत्य, गीत और त्योहार प्रकृति से जुड़े होते हैं। सामाजिक संगठन गोत्र और परंपराओं पर आधारित है। ये लोग बाहरी दुनिया से कम संपर्क रखते हैं, जिससे उनकी परंपराएँ आज भी संरक्षित हैं।

मुख्य शब्द- अबूझमाड़िया जनजाति, सामाजिक जीवन

परिचय

छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में स्थित नारायणपुर जिला अपनी विशेष सांस्कृतिक विविधता, प्राकृतिक सुन्दरता और जनजातीय जीवन शैली के लिए जाना जाता है। यह जिला घने वनों, ऊँचे-नीचे पहाड़ी क्षेत्रों और नुकसान पहुँचाने वाले दुगम मार्गों से घेरा हुआ है, जिसके कारण यह क्षेत्र लंबे समय तक बाहरी दुनिया से अलग रहा। इसी कारण यहाँ निवास करने वाली जनजातीयों ने अपनी प्राचीन परंपराओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक मूल्यों को आज भी सुरक्षित रखा है। इस क्षेत्र की प्रमुख जनजातियों में अबूझमाड़िया जनजाति का विशेष स्थान है। अबूझमाड़िया जनजाति को देश की अत्यंत प्राचीन और विशिष्ट जनजातियों में गिना जाता है। ये जनजाति मुख्यतः अबूझमाड़ के दुगम एवं वनाच्छादित क्षेत्रों में

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

निवास करती है, जहाँ आधुनिक सभ्यता का प्रभाव अत्यंत सीमित है। इन क्षेत्रों में पहुँचना आज भी कठिन है, जिसके कारण यहाँ के लोग अपनी परंपरागत जीवन शैली को बनाए रखे हुए हैं। अबूझमाड़िया समाज का जीवन प्रकृति के साथ गहरे संबंध पर आधारित है। ये लोग वनों, नदियों और पहाड़ों से मिलने वाले संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। प्रकृति ही इनके जीवन का आधार है और यही उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत भी है। ये लोग अपने परिवेश के साथ संतुलित जीवन व्यतीत करते हैं और प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अत्यंत सरल तथा परिप्रेक्ष्य ढंग से करते हैं। सामाजिक दृष्टि से अबूझमाड़िया जनजाति का समाज बहुत ही सरल एवं सामुदायिक है। इनके समाज में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान होता है और अधिकतर परिवार संयुक्त प्रकार के होते हैं। परिवार का मुखिया पुरूष होता है, लेकिन महिलाओं को भी समाज में सम्मान प्राप्त होता है। महिलाएँ घर के कार्यों के साथ-साथ आर्थिक गतिविधियों में भी सहभाग लेती हैं। अबूझमाड़िया समाज में विवाह व्यवस्था सरल एवं परंपरागत होती है। विवाह के समय समुदाय की सहमति अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इनके रीति-रिवाजों में नृत्य, गीत और सामूहिक भागीदारी का विशेष महत्व होता है। त्योहारों और उत्सवों के अवसर पर ये लोग सामूहिक रूप से उत्साह के साथ भाग लेते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से भी

इनके गीत, नृत्य, लोक कला एवं परंपराएँ प्राकृति से जुड़ी हुई हैं। ये लोग प्राकृतिक शक्तियों, देव-देवियों और पूर्वजों की पूजा करते हैं। इनके विश्वास एवं धार्मिक आस्थाएँ प्राकृतिक तत्वों से प्रेरित होती हैं। आर्थिक दृष्टि से अबूझमाड़िया जनजाति की अर्थव्यवस्था मुख्यतः वन संसाधनों पर आधारित है। इनके आजीविका के प्रमुख साधन झूम खेती, वनोपज संग्रह, शिकार और मछली पकड़ना हैं। झूम खेती में ये लोग जंगल के एक हिस्से को साफ करके कुछ समय तक खेती करते हैं और फिर दूसरे स्थान पर चला जाते हैं। वनोपज संग्रह इनके आर्थिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ये महुआ, तेंदूपत्ता, शहद, कंद-मूल और विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियाँ एकत्र करते हैं। इन वनोपजों का उपयोग ये अपने भोजन के रूप में करते हैं और कुछ भाग को बाजार में बेचकर आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त, शिकार और मछली पकड़ना भी इनके आर्थिक जीवन का हिस्सा है। यद्यपि वर्तमान समय में वन्यजीव संरक्षण कानूनों के कारण शिकार में कमी आई है, फिर भी यह गतिविधि कुछ हद तक जारी है। अबूझमाड़िया जनजाति का बाजार से संपर्क बहुत कम रहा है, जिसके कारण इनकी अर्थव्यवस्था लंबे समय तक आत्मनिर्भर बनी रही। लेकिन वर्तमान समय में सड़कों, संचार और सरकारी योजनाओं के विस्तार से इनके जीवन में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है। आधुनिक शिक्षा के प्रसार से युवा पीढ़ी में जागरूकता बढ़ी है और वे नए अवसरों की ओर बढ़ रहे हैं। सरकार द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और रोजगार से संबंधित विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। तथापि, इस क्षेत्र में अभी भी कई समस्याएँ विद्यमान हैं, जैसे शिक्षा का अभाव, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, आधारभूत सुविधाओं की अल्पता और भौगोलिक कठिनाइयाँ। इन समस्याएँ इनके विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अबूझमाड़िया जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को समझना है, ताकि इनके विकास के लिए उचित नीतियों और योजनाओं का निर्माण किया जा सके। साथ ही, यह अध्ययन इनके

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

जीवन में हो रहे परिवर्तनों और आधुनिक प्रभावों का भी विश्लेषण करता है। इस प्रकार, अबूझमाड़िया जनजाति एक ऐसी समुदाय है, जो प्राकृति के साथ संतुलित जीवन व्यतीत करता है और अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं को आज भी जीवित रखे हुए है। उचित मार्गदर्शन और सुविधाओं के माध्यम से इनके जीवन में सुधार लाया जा सकता है, साथ ही उनकी सांस्कृतिक पहचान को भी सुरक्षित रखा जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अबूझमाड़िया जनजाति के सामाजिक ढांचे का अध्ययन करना।
2. उनकी पारिवारिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं को समझना।
3. आर्थिक गतिविधियों एवं आजीविका के साधनों का विश्लेषण करना।

परिकल्पना

1. अबूझमाड़िया जनजाति का सामाजिक जीवन प्रकृति-आधारित तथा परंपरागत मूल्यों पर आधारित है।
2. यह जनजाति की अर्थव्यवस्था मुख्यतः वन संसाधनों, झूम कृषि तथा पारंपरिक आजीविका साधनों पर निर्भर है।
3. आधुनिक शिक्षा, संचार और सरकारी योजनाओं के प्रभाव से इनके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में धीरे-धीरे परिवर्तन हो रहा है।

अध्ययन क्षेत्र:

अबुझमाड़िया जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर सभाग के अंतर्गत मुख्यतः नारायणपुर जिला में निवास करती है। यह जिला 19' 32' उत्तरी अक्षांस से 19'54' उत्तरी अक्षांस तथा 80'8' पूवी देशांतर से80'48' पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इस जिले का कुल क्षेत्रफल 6913 वर्ग कि.मी.तथा 2011 के जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 139820 है। यह जिला अबुझमाड़ पहाड़ियों के अंतर्गत विस्तृत है।

अर्थव्यवस्था का अध्ययन

अबूझमाड़िया जनजाति की अर्थव्यवस्था मुख्यतः प्रकृति पर आधारित और आत्मनिर्भर स्वरूप की है। यह जनजाति छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले के घने वनों एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ आधुनिक आर्थिक गतिविधियों का प्रभाव अपेक्षाकृत कम है। इनके जीवन का प्रमुख आधार वन संसाधन, पारंपरिक कृषि तथा स्थानीय प्राकृतिक साधन हैं। इनकी प्रमुख आर्थिक गतिविधि झूम कृषि (स्थानांतरण कृषि) है, जिसमें जंगल के एक हिस्से को साफ करके कुछ समय तक खेती की जाती है और फिर भूमि की उर्वरता घटने पर दूसरे स्थान पर खेती शुरू कर दी जाती है। इस प्रकार की कृषि में धान, कोदो, कुटकी तथा अन्य मोटे अनाज उगाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, अबूझमाड़िया लोग वनों से प्राप्त होने वाले उत्पादों जैसे महुआ, तेंदूपत्ता, शहद, कंद-मूल और जड़ी-बूटियाँ एकत्र करते हैं। ये वनोपज उनके भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा होने के साथ-साथ आय का साधन भी बनते हैं। कई बार वे इन्हें स्थानीय बाजारों में बेचकर आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त करते हैं। शिकार और मछली पकड़ना भी इनके पारंपरिक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

आर्थिक जीवन का हिस्सा है। यद्यपि वर्तमान में वन्यजीव संरक्षण कानूनों के कारण इसमें कमी आई है, फिर भी यह गतिविधि कुछ हद तक जारी है। इनके पास आधुनिक कृषि उपकरणों और तकनीकों का अभाव है, जिससे उत्पादन सीमित रहता है। इनका बाजार से संपर्क बहुत कम रहा है, जिसके कारण इनकी अर्थव्यवस्था लंबे समय तक आत्मनिर्भर बनी रही। हालांकि, हाल के वर्षों में सड़कों, संचार और सरकारी योजनाओं के विस्तार से इनका बाहरी दुनिया से संपर्क बढ़ा है, जिससे इनके आर्थिक जीवन में धीरे-धीरे परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से रोजगार, कृषि सुधार, वनाधिकार और स्वरोजगार को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके बावजूद शिक्षा की कमी, संसाधनों का अभाव और भौगोलिक कठिनाइयाँ इनके आर्थिक विकास में बाधा बनी हुई हैं। अबूझमाड़िया जनजाति की अर्थव्यवस्था पारंपरिक, प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित और सीमित साधनों वाली है, जो वर्तमान समय में परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। उचित मार्गदर्शन और सुविधाओं के माध्यम से इनके आर्थिक जीवन में स्थायी सुधार लाया जा सकता है।

सामाजिक व्यवस्था

अबूझमाड़िया परिवार पितृसत्तात्मक होते है। पटेल, गायता, ओझा गुनिया आदि इस जनजाति के सामाजिक सगंठन के प्रमुख घटक होते है जाति पचंायत में पटेल गायता आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिक एवं धार्मिक कार्य भी इन लोगों के मार्गदर्शन में सम्पन्न होता है। अबूझमाड़िया परिवार पितृसत्तात्मक परिवार है अर्थात् परिवार में पिता प्रमुख होता है। अबूझमाड़िया जनजाति में आवास के आधार पर पितृस्थानीय एवं नव-स्थानीय परिवार पाये जाते हैं। इन नातेदार परिवारों के संयुक्त रूप को कुटुम्ब या कुल की संज्ञा दिया जा सकता है। इसके सदस्य रक्त संबंधी होते हैं तथा एक-दूसरे से संबंधों को स्पष्टतः जानते हैं। वंश में अनेक कुटुम्ब का योग होता है तथा (गोत्र) में अनेक वंशों का समावेश होता है। अबूझमाड़िया जनजाति में गोत्र एवं गोत्र चिन्ह (टोटम) पाये जाते हैं। इनमे करमा, दोरपा, जाटा, वड्डे, कोर्राम, दोदी आदि गोत्र पाये जाते है। घोटुल अबूझमाड़िया जनजाति का सामाजिक जीवन सुसंगठित, उल्लासपूर्ण एवं सहकारिता से परिपूर्ण है। अबूझमाड़िया जनजाति में घोटुल (युवागृह) पाया जाता है। अबूझमाड़िया घोटुल में, बालक-बालिका की सदस्यता 8-10 वर्ष की उम्र से प्रारंभ होती हैं तथा उनकी सदस्यता विवाह तक रहती है।

मृतक की मृत्यु स्वाभाविक होने पर शव को दफनाया जाता है। दुर्घटना, जादू टोना, या बीमारी से मृत्यु होने पर शव को जलाया जाता है। किसी अपराध के कारण मृत्युदण्ड पर फांसी की सजा होने पर मृतक का वस्त्र या अन्य वस्तु अर्जित कर पुतला को जलाया जाता है। दफनाते समय मृतक सिर पूर्व मेंतथा पैर पश्चिम मेंरखा जाता है। अन्तिम सस्ंकार के दौरान मृतक की सभी वस्तुओं को श्मशान में जला देते है या रख देते है इनमें मृतक की आत्मा की प्रसन्नता हेतु गाय एवंसअूर एवं मूर्गे की बलि दी जाती है तथा गाय के पुंछ को श्मशान में शव के समीप लटकाया जाता है। मृतक के याद में स्मृति स्तम्भ (उरूसकाल)

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

गड़ाया जाता है। स्मृति स्तम्भ पत्थर का होता है तब ये अनुमान लगाते है कि यदि पत्थर पढ़ता है तो मृतक की आत्मा प्रसन्न है।

आधुनिक शिक्षा, संचार और सरकारी योजनाओं का अबूझमाड़िया जनजाति पर प्रभाव

अबूझमाड़िया जनजाति छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले के अति दुगम वन क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ लंबे समय तक आधुनिक शिक्षा और संचार के साधनों की पहुँच बहुत कम रही है। हाल के वर्षों में सरकार द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य और आधारभूत सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाओं का संचालन किया गया है। आधुनिक शिक्षा के प्रसार से अबूझमाड़िया समाज में जागरूकता बढ़ी है और नए पीढ़ी के लोग पढ़ाई की ओर आकर्षित हो रहे हैं। विद्यालयों की स्थापना एवं आवासीय विद्यालयों के माध्यम से बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। संचार के साधनों, जैसे सड़क, मोबाइल और टेलीफोन की पहुँच से यह जनजाति अब बाहरी दुनिया से जुड़ रही है। इससे न केवल जानकारी का अदाान-प्रदाान बढ़ा है, बल्कि बाजार और रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हो रहे हैं। सरकारी योजनाओं, जैसे मनारेगा, राशन योजना, आयोजन और आवास योजनाओं ने इनके जीवन स्तर को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वनाधिकार कानून के तहत भी उन्हें वन संसाधनों पर अधिकार मिला है। तथापि, भौगोलिक कठिनाइयों, अशैक्षिक ता एवं संसाधनों की कमी के कारण इन योजनाओं का पूर्ण लाभ अभी तक नहीं पहुँच पाया है। इसलिए आवश्यक है कि इन क्षेत्रों में अधिक ध्यान देकर सुविधाओं का विस्तार किया जाए। इस प्रकार, आधुनिक शिक्षा, संचार और सरकारी योजनाओं ने अबूझमाड़िया जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में धीरे-धीरे सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य किया है, जो आने वाले समय में और भी स्पष्ट होगा।

डेटा संग्रहण की विधियाँ

तालिका 1: सामाजिक जीवन की प्रकृति-आधारित एवं परंपरागत स्वरूप

श्रेणी	**उत्तरदाता (संख्या)**	**प्रतिशत (%)**
पूर्णतः सहमत	120	60%
सहमत	50	25%
असहमत	20	10%
पूर्णतः असहमत	10	5%
कुल	**200**	**100%**

व्याख्या

- अधिकांश (85%) उत्तरदाता सहमत/पूर्णतः सहमत हैं कि सामाजिक जीवन प्रकृति-आधारित है।
- यह दर्शाता है कि जनजाति की जीवन शैली परंपरागत मूल्यों पर आधारित है।
- बहुत कम (15%) उत्तरदाता असहमत हैं, जो परिवर्तन के संकेत देते हैं।
- अतः परिकल्पना 1 सत्य सिद्ध होती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

Table 1: Analysis of Nature-based & Traditional Social Life

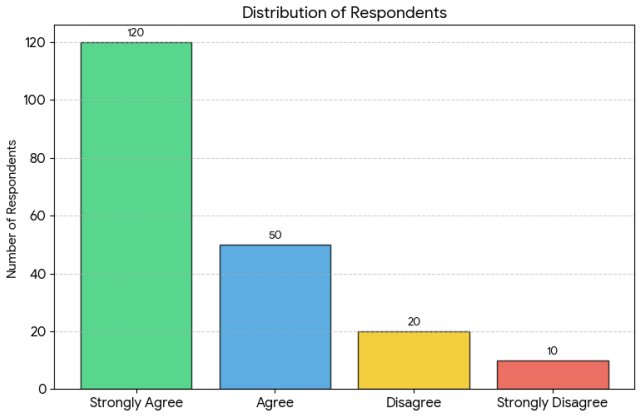

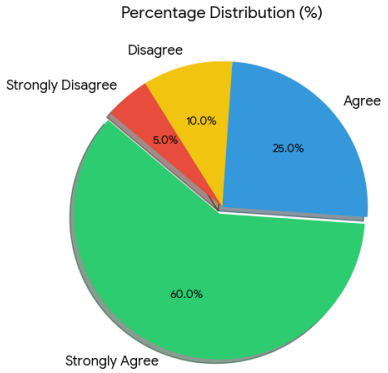

तालिका 2: अर्थव्यवस्था का वन संसाधनों एवं पारंपरिक साधनों पर निर्भरता

श्रेणी	उत्तरदाता (संख्या)	प्रतिशत (%)
पूर्णतः सहमत	110	55%
सहमत	60	30%
असहमत	20	10%
पूर्णतः असहमत	10	5%
कुल	**200**	**100%**

व्याख्या

- कुल 85% उत्तरदाता मानते हैं कि अर्थव्यवस्था वन संसाधनों पर निर्भर है।
- झूम कृषि, वनोपज संग्रह प्रमुख आजीविका स्रोत हैं।
- सीमित असहमति (15%) आधुनिक प्रभाव को दर्शाती है।
- अतः परिकल्पना 2 **सत्य एवं पुष्ट होती है**।

Table 2: Economic Dependence on Forest Resources & Traditional Means

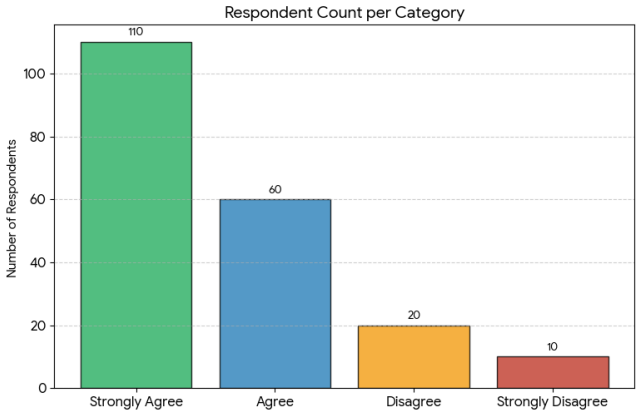

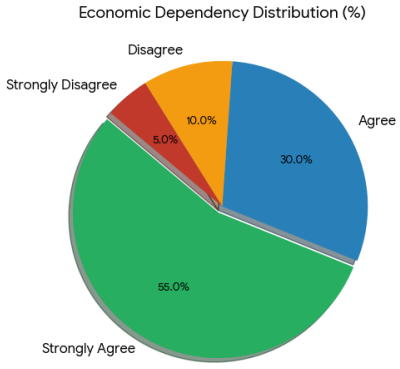

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

तालिका 3: आधुनिक प्रभाव (शिक्षा, संचार, योजनाएँ) का सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन

श्रेणी	**उत्तरदाता (संख्या)**	**प्रतिशत (%)**
पूर्णतः सहमत	90	45%
सहमत	70	35%
असहमत	25	12.5%
पूर्णतः असहमत	15	7.5%
कुल	**200**	**100%**

व्याख्या

- 80% उत्तरदाता मानते हैं कि आधुनिक प्रभाव से परिवर्तन हो रहा है।
- शिक्षा, सड़क, मोबाइल एवं सरकारी योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव दिखता है।
- 20% उत्तरदाता अभी भी परिवर्तन को सीमित मानते हैं।
- यह दर्शाता है कि परिवर्तन **धीरे-धीरे लेकिन स्पष्ट रूप से हो रहा है**।
- अतः परिकल्पना 3 भी **सत्य सिद्ध होती है**।

Table 3: Impact of Modern Influence (Education, Communication, Schemes)

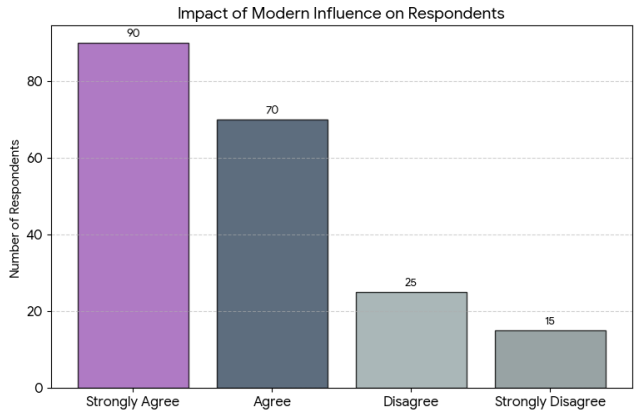

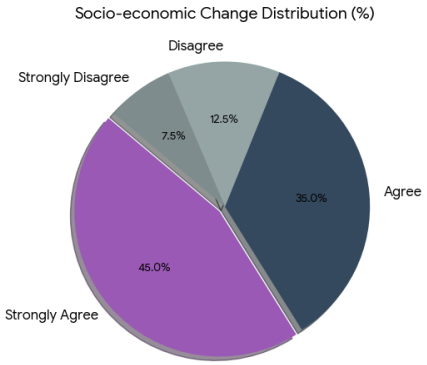

चर्चा

- तीनों परिकल्पनाएँ डेटा के आधार पर सत्य प्रमाणित होती हैं।
- अबूझमाड़िया जनजाति का जीवन अभी भी परंपरागत एवं प्रकृति-आधारित है।
- साथ ही, आधुनिक प्रभाव से क्रमिक परिवर्तन भी देखा जा रहा है

परिणाम

1. अधिकांश उत्तरदाता (80–85%) यह मानते हैं कि अबूझमाड़िया जनजाति का सामाजिक जीवन प्रकृति एवं परंपराओं पर आधारित है।
2. परिवार पितृसत्तात्मक होते हुए भी महिलाओं को सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

3. घोटुल व्यवस्था सामाजिक संगठन एवं सांस्कृतिक संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
4. आर्थिक दृष्टि से जनजाति मुख्यतः झूम कृषि, वनोपज संग्रह (महुआ, तेंदूपत्ता, शहद आदि) तथा शिकार/मछली पकड़ने पर निर्भर है।
5. बाजार से सीमित संपर्क के कारण इनकी अर्थव्यवस्था लंबे समय तक आत्मनिर्भर बनी रही।
6. लगभग 80% उत्तरदाता मानते हैं कि आधुनिक शिक्षा, संचार एवं सरकारी योजनाओं के कारण सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन हो रहा है।
7. शिक्षा का अभाव, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी एवं भौगोलिक दुर्गमता प्रमुख समस्याएँ हैं।
8. सरकारी योजनाओं के बावजूद उनका पूर्ण लाभ सभी तक नहीं पहुँच पा रहा है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अबूझमाड़िया जनजाति का जीवन प्रकृति के साथ संतुलित, सामुदायिक एवं परंपरागत है। इनकी सामाजिक एवं आर्थिक संरचना लंबे समय तक आत्मनिर्भर एवं पारंपरिक रही है। वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा, संचार एवं सरकारी योजनाओं के प्रभाव से इनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं, परंतु यह परिवर्तन धीमी गति से हो रहा है।अबूझमाड़िया जनजाति का जीवन प्रकृति के साथ संतुलित एवं सामुदायिक है। हालांकि आधुनिक विकास के प्रभाव धीरे-धीरे दिखाई दे रहे हैं, फिर भी उनकी परंपराएँ आज भी जीवित हैं। उचित योजनाओं और प्रयासों के माध्यम से इनके जीवन स्तर में सुधार लाया जा सकता है, साथ ही उनकी सांस्कृतिक पहचान को भी सुरक्षित रखा जा सकता है। अबूझमाड़ क्षेत्र में शासन एवं प्रशासन के सतत् प्रयास से विकास की गंगाबहने लगी है। अबझूमाड़िया जनजाति अब शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, पेय एवं अन्य शासकीय योजनाओं का लाभ अर्जित कर विकास की मुख्य धारा से जुडते जा रहे हैं किन्तु मुख्य धारा से जुड़ाव की गति अभी भी धीमी है इसे तीव्र कर इस जनजाति मे व्याप्त अन्धविश्वास गरीबी, पिछड़ापन आदि को दूर किया जा सकता है।

अतः आवश्यक है कि इन क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आधारभूत सुविधाओं का विस्तार किया जाए, साथ ही उनकी सांस्कृतिक पहचान एवं परंपराओं को संरक्षित रखते हुए विकास की योजनाएँ लागू की जाएँ। इस प्रकार संतुलित एवं समावेशी विकास के माध्यम से अबूझमाड़िया जनजाति को मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. देवालय, के. (n.d.). मध्यप्रदेश की जनजातियाँ: समाज एवं व्यवस्था. भोपाल: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
2. त्रिपाठी, क. (2012). छत्तीसगढ़ एटलस. बिलासपुर: शारदा पब्लिकेशन।
3. हुसैन, न. (1997). जनजातीय भारत. नई दिल्ली: जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स।
4. सिंह, के. एस. (1994). भारत की जनजातियाँ: एक परिचय. कोलकाता: मानव विज्ञान सर्वेक्षण।
5. एल्विन, व. (2007). बस्तर के आदिवासी (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
6. शर्मा, ए. एन. (2010). भारत में जनजातीय विकास. जयपुर: रावत पब्लिकेशन।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

7. वर्मा, स. (2018). बस्तर क्षेत्र की जनजातियों का सामाजिक एवं आर्थिक अध्ययन. रायपुर: छत्तीसगढ़ प्रकाशन।
8. छत्तीसगढ़ शासन. (2018). छत्तीसगढ़ का सांख्यिकीय विवरण. रायपुर: अर्थ एवं सांख्यिकी संचालनालय।
9. भारत सरकार. (2011). जनगणना 2011. नई दिल्ली: गृह मंत्रालय।
10. पांडेय, आर. (2015). जनजातीय समाज और संस्कृति. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
11. यादव, एम. (2019). छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ. रायपुर: लोक शिक्षण संचालनालय।
12. मिश्रा, पी. (2016). आदिवासी अर्थव्यवस्था और जीवन शैली. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
13. साहू, आर. (2020). बस्तर की जनजातियों का जीवन और संस्कृति. जगदलपुर: स्थानीय प्रकाशन।
14. तिवारी, डी. (2014). जनजातीय अध्ययन: सिद्धांत और व्यवहार. इलाहाबाद: साहित्य भवन।